

१६१ जीठ पूजा : घर बापना विधि

हं जूव गुं ० न याय ॥ मूल नसाय ॥ नमः ॥
 पाठनं खयालं खन हाय ॥ वं १५ नमः ॥ ताक
 याडा ॥ भधनं ॥ भं क मेव पनी ॥ भं सु ल सु ख म
 यं कुर्वं क दाह वी ॥ भं ह त्यां न न ना ना या म
 हं ॥ भं स स्य मे सु ल सं ह नं व नू ॥ भं ल य मं हं
 ॥ भं मा वी ॥ भं म य द वि ॥ भं क ॥ भं पा दि मं य र्मा ॥

नंद ता नां पु ॥ भं वा वी ॥ भं वृ ॥ भं न न द म व य दि ॥ भं न
 सु ल प न ग द वि ॥ भं वृ ॥ भं ह त्यां य वा ह गु ॥ ३ ॥ भं
 ल न द स धा व ड य ॥ भं पू ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥
 य मं सु धा द्ये व ष ॥ ३ ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥
 स दि मी न मू ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥
 हा य ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥ भं ॥

नत्न पूजनं ॥ मूर्त्तं मूर्त्तं मूर्त्तं मूर्त्तं पञ्च नत्नं स्थान
मः ॥ ॥ मत्स्य मुद्रा च पातु ग
क पुत्र ॥ मूल मन्त्रे नक्षत्र ॥ ॥ पूज्यो भूति र या
मि मुद्रा क न ॥ धनं श्री पातु स्थापनं ॥ ॥ गुन
पातु स्थापनं नयाय अर्था स्थापनं ॥ ॥ धनं १० रु
॥ ॥ धनं १० रु पातु स्थापनं ॥ मधु य के स्था

पने ॥ ॥ गुन पातु च मुन न प्य ॥ ॥ न स्था
पन मन्त्रे नक्षत्र पातु न प्य या मि न मः ॥
॥ स्थापनं पातु न प्य गुन पातु न प्य या मि
न मः ॥ ॥ स्थापनं पातु न प्य गुन पातु न प्य
या मि न मः ॥ ॥ लीन पातु मन्त्रे न प्य निवा
न प्य ॥ ॥ मूल सायुधं स वाहनं स प निवा

नकाडा लाहा धमि का डा श्री पाश्र्म सवाढ मोर्थन
 विन्दु स्त्री का न या य ॥ अथ पर्ववलि दानं ॥
 शि का न वा क था या डा मु द्वि मी न मू डा दि च न्द
 ना क रु पृथ मा य म्वा न व नि स न य ॥ रा ग पा
 र्म थू का डा व लि वि य ॥ ग्रा ङ्ग क ल म्ब व द
 क ना थ व लि ण्द्र २ स्वा हा ण ष व लि व द क

नाथाय नमः ॥ यां या नि नी र्ग १ स्वा हा स व्व या
 नि नी र्ग रु ट स्वा हा ॥ ण ष व लि या नि नी र्गान
 मः ॥ द्वां स्व स्का न क र्ण प न्थ या व लि ण्द्र २
 स्वा हा ॥ ण ष व लि १ द्वां पाला य न मः ॥ ग र्ग
 ल प न य व लि ण्द्र २ स्वा हा ण ष व लि ग र्ग
 प न य न मः ॥ ३० स व्व वि ष्णु रु द्र १ द्वां स्वा

हा ॥ ७ ष वलि १ सर्व ह्म न खानम १५ ॥ निपय
वलि ॥ ॥ दा खान खान वन अ द्दु न गया डा
क कृ प मू डा न ध्यान या य ॥ वहु बु जों कृ पू वहु
मू लु माला विरु चित्तां । ख म्म द द्दि । य पा । लो विरु
नी न्दी वन द्यै ॥ क र्त्तु स्व र्थे न । खे व कृ मा द्दा
म न विरु चित्तां । यो लिख नीं ज रां म को विरु नी नि

न सा द्यै ॥ मू लु माला य ना मी र्थ नी वा या म पि वा
प न । व कृ मा ना ग द्दु नै व विरु नी न क ला य नी
॥ कृ पू व मु ध नां क र्त्ता वा घा जि न स म ति ना ।
वा म पा दै ग व द्दु दि । सै र्म्मा पा द द्दि र्त्ता प दै ॥ विरु
पा सिं द्दु पृ ष्ठु लु लि द्दान न व द्दु यै । सा द्दु दा र्म
म द्दा द्दाने ना व यू की मू ली य त्तां ॥ थ न ध्यान या

कावयनुसुत ॥ महायज्ञवनाकम् ^{श्री} कामधामन
न्दविग्रह । सर्वरुद्रहि न मान न दक्ष दि पत्रम
व्यनि ॥ श्रीनयुष्यं नमः ॥ ॥ महाकालसहि
श्रीदक्षिणकालिके ॐ हा गकर ॐ ह तिष्ट ॐ
ॐ ह सन्ति । व हि ॐ ह सन्निवृद्धा रुवेर ॐ ह
समस्वार्तुवर समप्रजोग्द हा ॥ आय ॥ ॥

अपनिष्ठा ॥ श्रीं जीं कां स्वाहा श्रीदक्षिणकालिका
याः पातम ॐ रुपाभाः ॥ श्रीं जीं कां स्वाहा श्रीद
क्षिणकालिकायाः जीव ॐ रुक्ति नः ॥ श्रीं जीं
कां स्वाहा श्रीदक्षिणकालिकायाः सर्वेन्द्रियाणि ॥
श्रीं जीं कां स्वाहा श्रीदक्षिणकालिकायाः वाक्पु
नानयन (प्राण) श्रोत्रपद्म ॐ हा गत्यसुखं विने

अनयाशन ३

विष्णुस्वाहा ॥३॥ कौटुब्यादिने देवताया के भू
 गन्धामयोये ॥ ईश्वरगुनीने वं धनमूडाखुता
 लययदिग्वन्वने योनि मूडां खे मूडाके ने ॥३॥
 पयानपूजा ॥ मूलें श्रीमद्वीस्वागतैक भलैमिद
 मास्यनी ॥ तयोनी ॥ मूलें श्रीमदकाकालसदि
 श्रीदक्षिणकालिके सायुध सपनिवाने मातसे
 १॥ प्राणायनमूल देवीतर्पणाय ३ ॥१॥

[illegible]

लिकाये ॐ दमाचमनीये स्वाहा ॥ मूले महाका
लसहिताये श्री दक्षिण कालिकाये ॐ देव्यानी
ये नमः ॥ मूले नमहाकालसहिताये श्री दक्षिण
कालिकाये ॐ देवक वन्दने नमः ॥ मूले महाका
लसहिताये दक्षिण कालिकाये ॐ देव वन्दनानि
ये नमः ॥ मूले महाकालसहिताये श्री दक्षि

ण कालिकाये ॐ दमकृते नमः ॥ मूले महाकाल
सहिताये दक्षिण कालिकाये ॐ देविन्द्रे नमः ॥
मूले महाकालसहिताये श्री दक्षिण कालिकाये
ॐ नमः ॥ मूले नमः ॥ मूले नमः ॥ मूले नमः ॥
ॐ देवे वायव्ये वरिष्ठे कृत्वा स्वाहा ॥ शिष्टं नमः
स्वस्ति मूलाकेन ॥ ॥ घण्टा पूजा ॥ लेखनं हायस्व

नमः१ चन्द्रमाकृतपूषात॥ पूजा॥ जें घांठये नमः१॥
पूषदीयतपूजा॥ रुद्रलेखनदाय॥ नमः१ पूजा॥
पूषत॥ सैठथाय॥ मूलमहाकालसहितायेदक्षि
नकालिकायेनुषध्वनमः१॥ मूलमहाकालस
हितायेप्रीदक्षिनकालिकायेनुषदीयतमः१॥ न
मः१॥ रुद्रलेखनदाय॥ यै१५ नमः१॥

नमः१ वैध्वमहाकालमः१ पूजा मूल३ कालरुयदि
काय॥ मूलमहाकालसहितायेप्रीदक्षिनकालि
कायेनुदैनवायेनिवदयामिनमः१॥ मूलनदय
थेनदीये॥ ३॥ मूलमूनवायमनीयनमः१॥ क
मलादि॥ मूलमहाकालसहितायेप्रीदक्षिनका
लिकायेनुदकथनादिसहितेतामूलनिवदया
मिनमः१॥ ॥ मूलप्रीदक्षिकालीदेवीप्रीपाइका

पूज्यामिनमः॥३॥ धनं श्रीगुरुलिनयाऽं वि
गुलखवम आनिनिमूडाकन प्रीमूलद वीयाग
वसमहाकातरुनम पूजायाय २॥ जंमं श्रीम
नकातरुनवध्या पादकां पूज्यामिनमः॥ ३॥ व
लेविय ॥ देनेवद्यं वलिं नृद्वर स्वाहा ॥ स्व
मूडा ॥ ॥ हागपाशमृतेन नथ्येन यादाव पूज

याय ॥ ॥ गुरुपाशक र्थ पूजा ॥ महादयं वाय
नमः॥ महादेवानन्दनाथाय नमः॥ विपुनास्वा
य नमः॥ जेवमनन्दनाथाय नमः॥ पूजुनिन्द
नाथाय नमः॥ जेवलखिलानन्दनाथाय नमः॥
जेवलावलानन्दनाथाय नमः॥ जेकमाना
नन्दनाथाय नमः॥ जेकोषानन्दनाथाय नमः॥

जेवन दानन्द नाथ यनमः॥ जे स्रवदी पा
 नन्द नाथ यनमः॥ जे मायास्वयेनमः॥ जे
 मायावलेनमः॥ ॥ कि॥ जे विसलानन्द नाथ
 यनमः॥ जे कुंलानन्द नाथ जे श्रीमसेनानन्द
 जे सुधानन्द०॥ जे मीनानन्द०॥ जे गान्धारी
 नन्द०॥ जे दुर्गाजानन्द०॥ जे पद्मापत्यानन्द०॥
 दा

जे मूलदद्यानन्द०॥ जे वनिदवानन्द०॥ जे वि
 घ्नदवानन्द०॥ जे कुंलामनानन्द०॥ जे समया
 नन्द०॥ जे श्रीगान्धारीनन्द नाथ यनमः॥ ॥ एवं
 वल्लभार्थमेषु श्रुत॥ श्रीगणेशाय नमः॥ जे न
 मः कांक्षी॥ जे कापालिनीनमः॥ जे कुंला
 यनमः॥ ॥ ॥ ॥ कुरु कुरु ज्ञायनमः॥ विना

धिनीये २ ॥ विप चिन्ता ये २ ॥ कृति ॥ चिन्ता ॥ ३ ॥
उग्रये २ ॥ उग्रये २ ॥ दीफाये २ ॥ हनीये ॥
क्रीनीलाये २ ॥ यत्ताये २ ॥ वलाकारये नमः ॥
वदुये ॥ क्री माताये ॥ मूढाये नमः ॥ मिता
ये ॥ कृतिर्वयम् ॥ अष्टदत्त ॥ अष्टाष्टाये नमः ॥
नी नानाये २ ॥ उ मादे वये २ ॥ उ वाम

माये २ ॥ उ को माये २ ॥ नृपनाजिकाये २ ॥ उ
वानाये २ ॥ अ नाना सिद्धये २ ॥ ॥ अष्टदत्ता ॥
नेदी अ मिता मरु नवाय नमः ॥ २ वनदुरु
नवाय २ ॥ २ वदुरु नवाय २ ॥ २ उन्मरु न
वाय २ ॥ २ कया लि नवाय २ ॥ २ ही वदुरु
नवाय २ ॥ २ मरु नवाय २ ॥ २ मरु नवाय २

वाया (थ पूजा ॥ औं श्री नमो भक्त यनमः ॥ थ न
पूजा या का उ म व न ॥ अं सु य रु ट् ॥ थ म नु व
अं यो सिल म अ म न ॥ रु द या य न मः ॥ थ म
नु व ली ख थ न ॥ औं थ न व न्द ना क न पू ष्य न ॥
अं क म म सा व नी थ आ या रु न या य म नु ॥ गं
(ग य ज मू न यै व ण म अ व नी म न स्व ति न

मोदसिन्दूकावनिरुलस्मिन्निधीरुव॥ यं
मनुजनीयं ज्ञावाहनयायवधनमूडाकन
थलंखन॥ दानमूलाय॥ दानदेवतापु
त्रा॥ मंगलपत्रयेनमः॥ द्वांक्षुपात्राय
नमः॥ वीं वृकनाथयनमः॥ यों यागिनी
योनमः॥ मंगं ज्ञयेनमः॥ यों यमूनाथ
४ माहनीरुयथन ४

येनमः॥ श्रीलक्ष्मीनमः॥ तं सनस्वत्येनमः॥
थतंधूतकावविष्णुनिवात्राय॥ श्रीरुना
दिक्कायावश्रयासथूकातावदुर्दिगमं काले॥
॥ तं सर्वतिष्ठानकादयदूंकुठस्वाहा॥ ॥ व
मलेखनकाया॥ तं नरु२ दूंकुठस्वाहा॥ ॥
रुमिथियाता॥ तं पवित्रवजे दूंकुठ

स्वाहा॥ ॥रुमी सविताय नमः॥ अ० १ सु
नरव वज्रनरव कूं रुठ स्वाहा॥ ॥ (थ पूजा॥
की आ धन गी कय नमः॥ (थ ला सा ला या जी
ला हा न न यि स्थि नं ला सा॥ ॥ ॐ पृथ्वी मनु स्थि
म नृ पृ। स्थि। अ। पि। सु न ल कृ न्द १ रुमी देव
ता श्री सुना नी प न विनियोग १॥ द्वाथ हन

ये ॥ १ ॥ शिवस्वयाश्रुतालाका दविस्वविष्णुनाथना
 त्वेव धामनयमानित्वं पवित्रमासनं कुरु ॥ २ ॥
 तनमस्कारेया ॥ कोटीवीनासनस्योने ॥ ॥
 विष्णुयास्वीकारं ॥ सूर्यार्घ्यं ॥ गुननमस्कारं ॥
 ॥ ॥ गनगुनमूलनमस्कारेयाय ॥ स्वतः ॥
 जं गुनस्थानम ॥ रुवम ॥ गैगलपनयेनम ॥
 मथ्यस ॥ मूलं मदिष्ट देवतायेनम ॥ ॥ ॥

घास रुनि लेखनं च लेखन पूजा रुन सदा या डा
पूषादि (मधन या य) ॥ ॐ पूषा कं तु ना ज्ञा रुन
नाता य हे म्भ क सै व धा य ॐ पूषा २ मदा पू
षा म पूषा पूषा सै रु व पूषा व या व की (ह्रुं ह्रुं रु
ह्रुं स्वा हा ॥ ॥ थन पूषा (मधन या डा डा) सकल
ना (मधन या य) ॥ मूल न क्र स पो ल (जो पा डा)

लेखन हाय ॥ ॥ ॐ आ १ ह्रुं रु ह्रुं स्वा हा ॥ काय
वा कू चि रु (मधन) ॥ ॥ ॐ न रु २ ह्रुं रु ह्रुं स्वा हा
नू गल म ल हा न न स्यं आत्मा न रु हा या य ॥ ॥ रु
६३ ध कं गाल जय गि न व न्धन या य ॥ ॥ अथ
हे न मु डि ॥ कृ ल नी सै पू म्ना ना जी न रु
स ४ ध कं थ न य हा डा सै रु मु द ल क म ल सै

मिवडा नापेक ॥ पा न मयाय ॥ यं १५ जव
नयाडा खडान सा डू काय ॥ नं ३४ न पा न याडा
सा कून ॥ वं ३२ खे व न याडा जवन सा पिके ॥
सा हं ध के स रु सुदल स वा रु क थु लि ती थ व थ
स न आ व न स ॥ ॥ नू ग ल स लो ह न न थि स्य पा
न पु नि ष्ठा या य ॥ ओं डों ओं हं हं द दि ए का ति

का या १ वा वृ नान य न (प्रा न धा न पा न) रु हा ग ल
सु खे वि नै नि ष्ठ कु स्ता हा ॥ नू ति ॥ ॥ अ थ मू ल स
षा दि न्या म १ ॥ अ थ म नु स्य रु न व स थि १ उ थि
क रु न्द १ द दि ए का ली द व न्ता ॥ ओं वी डं डूं ग
कि १ आ श वी डं की ल के अ ली ए मि द य वि
नियोग १ ॥ हा थ द ल य ॥ ॥ भा ल स ॥ रु न व

जुषयनमः॥ अश्व॥ उषिकुन्दमनमः॥
नृगलम॥ दक्षिणकालीदेवनायनमः॥
जोवीनायनमः॥ गुडम॥ ॥ हूँ मकारयन
मः॥ पालीम॥ ॥ आयवीरुकीलकायनमः॥
मकरलिनं ॥ ॥ कर्नाठन्याम॥ कां अरु
हास्यानमः॥ कां तर्जनीत्यानमः॥ हूँ मध्व

मास्यानमः॥ कां अनामिकास्यानमः॥ कां कनि
स्यानमः॥ ऊ० कनकलपुष्टास्यानमः॥
अर्नन्यामः॥ कां हृदयायनमः॥ कां गिनम
स्वाहा॥ हूँ गिषायवषट् ॥ कां कवचाय हूँ ॥
कां नृगुयाय वीषट् ॥ ऊ० अस्त्राय रुट् ॥
तिमूर्त्यन्यामः॥ ॥ वलुन्यामः॥ जै० हूँ रु

दि ॥ ॥ ॐ ॐ दक्षिण ॐ ॥ ॥ ॐ ॐ वाम ॐ ॥
ॐ ॐ दक्षिण पाद ॥ ॥ ॐ ॐ वाम पाद ॥ ॥
ॐ ॥ ॥ मातृ का न्या मः ॥ ॥ हा कन पात्र म्य मातृ
का न्या मस्य ॥ ॥ मित्र म ॥ ॥ बुद्ध ॥ ॥ ॐ ॐ य न मः ॥
॥ मूर्य म ॥ ॥ गायत्री कन्द म न मः ॥ ॥ नू गृ म ॥ ॥ मातृ
कोद व गाय न मः ॥ ॥ गु ऋ म ॥ ॥ ह ला वी ज्ञे य न मः ॥

पालि म ॥ ॥ स्व ना हा कि र्थान मः ॥ ॥ सर्व म म ॥ ॥ अथ
का की ल का य न मः ॥ ॥ द्र ये ॥ ॥ म म म स वे पा प द्र या
॥ ॥ यत्र प वि निया गः ॥ ॥ ॐ कं स्वं गं धं दं ॐ
ॐ गु ष्ठा र्थान मः ॥ ॥ ॐ वं कं जं मं ॐ ॐ ॐ ॐ
नी र्थान मः ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ म ध मी र्थान
मः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अना मि का र्थान मः ॥

ॐ पंरुं वंरं मंउं कनिषास्था नमः॥ अयं
नंलं वंरं षं मंरुं कं जूः कनतलपृ षास्था
नमः॥ इति ॥ ॥ अं कं रवं नं घं दें आं ह दयाय
नमः॥ ॐ वंरुं जं मं अं नो मि न स स्वाहा ॥ उं टं
ॐ उं दं लं ड निषाये व षट् ॥ नं हं थं दं धं नं नं
क व वाय हू ॥ ॐ पंरुं वंरुं मंउं न ज्ञ या य

वा षट् ॥ अयं नंलं वंरं षं मंरुं कं जूः अमुय
रुट् ॥ इति ॥ ॥ अं न म्मिह कात्या मः॥ वंरं षं
मं ॥ मूलाधामे नमः॥ वंरुं मं यं वंरं लं ॥ लिंग मः॥ २॥
उं रं लं नं थं दं धं नं पंरुं ॥ नारि मः॥ ३॥ कं रं
नं रं दें वंरुं जं मं अं टं ॥ ह दय ॥ ४ ॥ अं
आं १२ अं अं ॥ कथ ॥ ५ ॥ हं दं ॥ क मः ॥ ६ ॥

नमः॥ पर्वि॥ ठं नमः॥ जवकवुकल ॥ वं न
मः॥ पुलि॥ ठं नमः॥ गुथि॥ दं नमः॥ जव
हुकि पर्वि॥ ठं नमः॥ पवी॥ ठं नमः॥
खवकनवुकल ॥ थं नमः॥ पुलि॥ दं नमः॥
गुथि॥ धं नमः॥ पर्वि॥ ठं नमः॥ पर्वि॥
पं नमः॥ जवयक ॥ रुं नमः॥ खव ॥ वं नमः॥

॥ जलधू ॥ रुं नमः॥ नाहि ॥ मं नमः॥ घायस ॥
थं नमः॥ नृग ॥ त्रं नमः॥ जवरुं नमः॥ लं
नमः॥ ककस ॥ वं नमः॥ खवरुं नमः॥ वं न
मः॥ नृगुं निमै जवलाकायवी॥ वानो ॥ पं न
मः॥ नृगुं निमै खवलालो वानो ॥ सं नमः॥
नृगुं निमै जवहुकि पवी॥ वानो ॥ रुं नमः॥ नृगु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

निमखवकुकिवागी ॥ लंनमः ॥ नृगलेनिम
खाथनी ॥ ॐ नमः ॥ नृगं निमखालका ॥
ॐ निमखका न्यासः ॥ ॥ मूलमन्त्रलयापक
न्यासः ॥ ३ ॥ कीं ५ कीं ५४ कीं ३२ ॥ पाप्मायामं ॥
॥ आत्मपूजनं ॥ ७ नमः ॥ नमः ॥ ॐ द
मकनं आत्मनमः ॥ ॐ दं सिं दं नमः ॥
॥ ७ नमः ॥ ॐ आत्मनमः ॥ ॥ मूलमन्त्रलया

लसगयाकुलिने ३ ॥ ॐ नि ॥ ॥ नवः पी ० पू
शौक्यो ॥ ॐ आधानमक यनमः ॥ ५
कुले नमः ॥ कर्मयनमः ॥ अनकाय २ ॥ एधि
वीर ॥ सधाम्भय २ ॥ मलिदीपाय २ ॥ विन्ना
मलिगुहाय २ ॥ धम्मनायनमः ॥ पात्रिज्ञा
ताय २ ॥ नन्नेवादिवाये २ ॥ मलिपीथय २ ॥

नमः ॥

वहुर्दिक्षु ॥ नाना मूलि स्था २ ॥ नाना देव स्था २ ॥
पनिग ४ ॥ वरु मां सा हि माद मान मि वा स्था २ ॥
मवे स्था २ ॥ मधु स्था २ ॥ पूर्व दिक्षु ॥ धर्मा य २ ॥
स्नाना य २ ॥ वेना द्वाय स्था २ ॥ वया य २ ॥ म्रध मा
य २ ॥ अस्नाना य २ ॥ श्वेना स्था य २ ॥ अने वया
य २ ॥ मधु ॥ अनेना य २ ॥ पद्मा य २ ॥ अर्क म
वहु ४ पाद ३

मुला य २ ॥ साम ममुला य २ ॥ वाक् ममुला य २
२ ॥ मसुला य २ ॥ येन जमेन मः ॥ तेन मसे २ ॥
ज्ज् आत्मने २ ॥ अर्कनात्मने २ ॥ येन मात्म
ने २ ॥ अर्कनात्मने २ ॥ अर्कदले ॥ अर्क काये
नमः ॥ स्नाना य २ ॥ १ कि या य २ ॥ १ कामिनी २ ॥
१ काम दा य २ ॥ १ नह २ ॥ नकि पिया य २ ॥ १

आनन्दाये २ ॥ कार्ष्णि कार्या ॥ जं मना न्माये २ ॥ म
॥ जं पना येनम ४ ॥ जं अपनाये २ ॥ मलिपी
॥ यत्रि ॥ श्री ॥ सदागिव महर्षे न पद्मासना
येनम ४ ॥ इतिपी ० पूजा ॥ ॥ घट स्थापनयाये ॥
यव खवसजूर्घाया लेखन हायविन्दु रि कीलव
कोल रुद्र वहु नमु म लुत्त वा य (थ पूजा ॥
आधाने का दिशानमः ॥ रुद्र धर्क मदीस

नमः ॥ मधुलाय ॥ मधुलाय ॥ मधुलाय ॥
नमः ॥ रुद्र धर्क घट सिला डाम रुद्र सने (थ पूजा
॥ जं अर्क मे लु लाय २ ॥ मूल मनु पत्र पाव नी धन
घट मथन ॥ रुद्र वन्दना रुद्र स्नान नै पूजा ॥ स
क्षाम मधुलाय नमः ॥ थ नै पूजा या दा डो द वा स
रुद्र पसनाम या य कर्षा नादिन ॥ रुद्र ३ दाय ॥